तपेदिक नियंत्रण : एक पड़ताल

डॉ. नरेश पुरोहित

तपेदिक (टी.बी.) की बीमारी के इलाज के लिए पहली दवा स्ट्रेप्टोमायसिन के ईजाद होने के पचास वर्ष बाद भी, आज दुनिया में 2.2 करोड़ लोग इस बीमारी से ग्रस्त हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वर्ष 1995 में दुनिया भर में 30 लाख लोगों की मौत इस रोग से हुई थी। भारत में जहां राष्ट्रीय तपेदिक नियंत्रण कार्यक्रम की शुरुआत 1962 में हो गई थी, वहां 1.4 करोड़ लोग तपेदिक की बीमारी से पीड़ित हैं एवं हर साल इस बीमारी के कारण 5 लाख लोगों की मृत्यु होती है।

केन्द्रीय स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय (1999) के अनुसार तपेदिक से पीड़ित कुल लोगों में से 25% लोग अत्यधिक संक्रामक हैं। और प्रत्येक वर्ष वर्तमान तपेदिक रोगियों की संख्या में 20 से 25 लाख नए रोगी जुड़ जाते हैं। राष्ट्रीय तपेदिक नियंत्रण कार्यक्रम की समग्र समीक्षा के लिए बनी टीम की 1992 में प्रकाशित रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया था कि भारत में 1990 से 2000 के बीच लगभग 35 लाख लोगों की मौत तपेदिक से होगी। तपेदिक से मरने वाले 75% लोग उत्पादक उम्र के, यानी 15 से 44 वर्ष के होते हैं।

हमारे देश में इस बीमारी के तेज़ी से फैलने में, भीड़ भरे रहवासों का बड़ा योगदान है। अनुमान है कि भारत में बिना इलाज वाला तपेदिक का प्रत्येक रोगी कम से कम 10 से 15 लोगों को संक्रमित करता है।

रोग के प्रति लम्बे समय से चली आ रही लापरवाही और सरकार की तरफ से पर्याप्त वित्तीय प्रावधान न होने से तपेदिक के विरुद्ध अभियान में रुकावट आई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्राथमिक रूप से अप्रभावी उपचार के कारण होने वाली बहु दवा प्रतिरोधी तपेदिक (मल्टी ड्रग रेज़िस्टेंट टी.बी.) के परिणामस्वरूप रोगी तो कमज़ोर हो जाता है जबकि बैक्टीरिया ताकतवर।

जहां तक बी.सी.जी. का सवाल है तो यह टीका 15 वर्ष तक के बच्चों के लिए असरदार होता है। परन्तु वयस्कों के मामले में यह प्रभावी नहीं होता है। फिर भी यह बच्चों में रोग के प्रकोप से बचाव के लिए एक असरदार हथियार बना हुआ है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की 1996 की स्वास्थ्य रिपोर्ट में कहा गया है कि 1995 में तपेदिक ने 30 लाख लोगों की जान ली। यह 1900 के शुरुआती दौर, जबकि तपेदिक की दवा नहीं खोजी गई थी, से भी ज़्यादा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि यदि इस रोग को नियंत्रित करने के लिए तत्काल कदम नहीं उठाए गए तो इस रोग के चलते अगले 10 साल में 3 करोड़ लोग जान गंवा सकते हैं।

टी.बी. के प्रति लम्बे समय से चली आ रही लापरवाही और सरकार की तरफ से पर्याप्त वित्तीय प्रावधान न होने से इसके विरुद्ध अभियान में रुकावट आई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्राथमिक रूप से अप्रभावी उपचार के कारण होनेवाली बहु दवा प्रतिरोधी तपेदिक के परिणामस्वरूप रोगी तो कमज़ोर हो जाता है जबकि बैक्टीरिया ताकतवर।

तपेदिक की अति संक्रमणकारी बीमारी तब फैलती है जबकि कैरियर (धारक) कफ एवं *ट्यूबरकुलोसिस बेसिलस* वातावरण में प्रवेश करते हैं। तपेदिक का बैक्टीरिया किसी दूसरे व्यक्ति को ग्रसित करने तक हवा में निष्क्रिय अवस्था में रहता है। हालांकि अनुमानित रूप से भारत की लगभग आधी आबादी टी.बी. से संक्रमित है, परन्तु वास्तव में थोड़े ही लोग इस बीमारी से पीड़ित हैं। तपेदिक का सबसे सामान्य प्रकार पलमोनरी टी.बी. फेफड़े का तपेदिक है, हालांकि यह बीमारी शरीर के दूसरे अंगों पर भी आक्रमण कर सकती है।

85 से 90% प्रकरणों में स्पुटम (थूक) परीक्षण, लाभ लागत की दृष्टि से टी.बी. के निदान का सबसे उत्तम तरीका माना जाता है। एक्स-रे भी टी.बी. के निदान में मदद करता है, हालांकि यह एक महंगा विकल्प है। हो